डा0 अजय कुमार सिंह
रीडर, प्रा० इतिहास विभाग
टी० डी० पी० जी० कालेज, जौनपुर

त्रांक :

दिनांक : 17/12/2002

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री विकास कुमार सिंह शोध–छात्र प्रा0 इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर) ने "चौलुक्य कालीन समाज एवं धर्म" शीर्षक से मेरे निर्देशन में अपना शोध कार्य विश्वविद्यालय के नियमानुसार पूरा किया है। जहाँ तक मेरी जानकारी है यह शोध–प्रबन्ध श्री विकास कुमार सिंह द्वारा संकलित तथ्यों पर आधारित मौलिक एवं अप्रकाशित है। मै इस शोध प्रबन्ध को प्राचीन इतिहास विषय में पी–एच0 डी0 उपाधि निमित्त संस्तुति सहित अग्रसारित करता हूँ।

डॉ0 अजय कुमार सिंह
शोध निर्देशक
रीडर, प्रा0 इतिहास
टी0डी0पी0जी0 कालेज, जौनपुर

डा0 ओम प्रकाश सिंह
रीडर एवं अध्यक्ष
प्रा0 इतिहास विभाग
टी0डी0पी0जी0 कालेज, जौनपुर

डॉ0 राधेश्याम सिंह
प्राचार्य
टी0डी0पी0जी0 कालेज, जौनपुर

Principal
T.D. College
Jaunpur

प्राक्कथन एवं आभार

गुजरात के चौलुक्यों का जितना व्यापक विस्तार एवं विराट राजनीतिक प्रभुत्व भारत में हुआ उतना गुप्तों और पूण्य भूतियों के पश्चात् किसी का नही हुआ। इस वंश की प्रतिभा को चार चांद लगाने वाले जयसिंह सिद्धराज तथा कुमार पाल चौलुक्य जैसे महान प्रतापी राजा हुए।

गुजरात के इतिहास के विषय में सदैव से बृहत साहित्य का सृजन होता रहा है। परन्तु चौलुक्य महाराजाधिराज, परम भट्टारक कुमारपाल के जीवन वृत्त पर जितने अधिक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी उठाई है, उतनी मध्यकालीन इतिहास में किसी के ऊपर नहीं हेमचन्द्र के द्वयाश्रय काव्य से लेकर सोमेश्वर, सोमप्रभा, चन्द्रप्रभा, बालचन्द्र, उदयप्रभा, मेरूतुंगा, जयसिंह सूरी, जिन मदन, इत्यादि लेखकों ने अपनी कृतियों में कुमार पाल के विषयों में विस्तार से लिखा है। कुमार पाल के जीवन में वह कौन सा आकर्षण था ? जिससे ये लेखक प्रभावित हुए। वह कौन सा प्रकाशपुंज था? जिसमें इन्होने अपने साहित्य का आधार ढूंठा? इसका एक मात्र उत्तर कुमार पाल का वह शौर्य पूर्ण जीवन हैं, जो उसने राजा के रूप में पचास वर्ष की अवस्था में प्रारम्भ किया था। राजकुल में उसने जन्म तो लिया था पर इस अपवाद के साथ कि उसके पितामह का सम्बन्ध किसी वकुला नामक नर्तकी से था। पितामह के अपराध स्वरूप राजकुमार कुमार पाल को यौवन के महत्वपूर्ण वर्षों में निर्वासन का जीवन व्यतीत करना पड़ा था। भाग्य के मीठे कड़वें अनुभवों के उपहारों को लेकर जब वह सिंहासनारूढ़ हुआ तो गुजरात पर विदेशियों के काले मेघ मड़रा रहे थे। वीर सेनानी के भांति उसने चहमान सम्राट अर्णोराज, मालवाधिपति बल्लाल, आबू नरेश विक्रम सिंह, कोंणदेव माल्लिकार्जुन को ही पराजित नही किया वरन् चौलुक्य सम्राज्य की सीमाओं को भी चँहुमुखी बनाया।

चौलुक्यों का राज्य काल सम्राज्य विस्तार अथवा सैनिक अभियानों के कारण ही महत्वपूर्ण हो ऐसी बात नहीं वरन् राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक, सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। चौलुक्यों का शासन काल देश में नवीन चेतना,

नवीन सामाजिक सुधार कलापूर्ण निर्णय तथा साहित्य, सांस्कृतिक पुनर्जागरण के युगारम्भ की दृष्टि से भारतीय इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है।

चौलुक्य नरेशों के युग में कुमार पाल से पहले और बाद में मुसलमानों के आक्रमण हुए, परन्तु कुशल प्रशासक कुमार पाल ने अपने शासन का इस तरह से गठन किया था कि किसी भी मुसलमान आक्रमणकारी को यह साहस न हो सका कि वह गुजरात की सीमाओं की ओर दृष्टि उठा सके। सामाजिक क्षेत्र में प्रचलित हिंसा, मधपान, मांसाहार, द्यूत आदि पर कठोर नियम बना कर उसने उस पिता का कर्तव्य पूरा किया जो शिशु की क्रीड़ा में व्यवधान डालता है कि कही उसका हाथ न जल जाय। आर्थिक दृष्टि से उसने मृत धनापहरण का निषेद्य किया और मंत्रियों के धन हानि के सुझाव पर भी ध्यान नहीं दिया। कृषि, बन्दरगाह, व्यापार इत्यादि तथा अन्य उपर्युक्त उदाहरण इस बात के प्रतीक है कि वह युग आर्थिक सम्पन्नता का युग था।

चौलुक्यों का जैन धर्म में विश्वास था। परन्तु सब धर्मो के आर्थिक संघर्ष और द्वेष के जल को पीने वाला वह "उमापतिवर लब्ध" था जो सब धर्मो का आदर करता था। उसकी कला प्रियता के अवशेष इस बात के साक्षी है कि कुमार पाल कला का पारखी था। आचार्य हेमचन्द्र उस युग के जैन आचार्य ही न थे। वरन् व्याकरण के प्रकाण्ड पंडित भी थे। अतः शासन के शीर्षस्थ पद पर बैठने वाले जिस सम्राट का गुरू हेमचन्द्र जैसा पंडित हो, उस युग की साहित्यक गतिविधियों की कल्पना करना सहज ही है।

परन्तु फिर भी साहित्य में कल्पना का स्थान होता है। उससे इतिहास का निश्चित परिणाम नहीं निकाले जा सकते सौभाग्य से चौलुक्यों के ढ़ेर सारे शिलालेख प्राप्त हुए है उनके जीवन वृत्त पर ढेर सारे प्रकाश डालते है। मुस्लिम इतिहासकारों ने भी यदा–कदा इन सम्राटों के विषय में लिखा है।

इन विस्तृत एवं पुरालिपि सामग्री के आधार पर इस युग के समाज एवं धर्म का अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। इस शोध प्रबन्ध को निम्न अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है। प्रथम अध्याय में चौलुक्यों की वंश की उत्पत्ति एवं प्राचीनता, द्वितीय अध्याय

में चौलुक्यों की सामाजिक व्यवस्था, तृतीय अध्याय में चौलुक्यों के आर्थिक जीवन, चतुर्थ अध्याय में चौलुक्यों के धार्मिक जीवन, पंचम अध्याय में चौलुक्यों के साहित्य एवं कला प्रेम का तथा षष्टम् अध्याय में चौलुक्यों के शासन व्यवस्था का वर्णन किया गया है।

आभार ज्ञाप्ति की श्रृंखला में सर्वप्रथम सम्यक् समयदान करने वाले आत्मकर्तव्यनिष्ठ, सर्वदृष्टि सहयोग ऐश्वर्य सम्पन्न एवं 'दुरूह अनुसंधान मार्ग प्रशस्तकर्ता' के रूप में अभिबन्ध अपने शोध निर्देशक डॉ0 अजय कुमार सिंह (रीडर, प्राचीन इतिहास विभाग टी0डी0पीजी0 कालेज, जौनपुर) का आभारी हूँ, जिन्होंने समय–समय पर ज्ञान– कौमुदी को विखेरा है, जिनसे मै अपेक्षित शोध ज्ञानार्जन कर सका हूँ।

मै श्री राघव प्रसाद सिंह (पूर्व विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास विभाग टी0 डी0 पी0 जी कालेज, जौनपुर) का आभारी हू जिन्होंने किंचित ज्ञान सलिल बिन्दुओं से संस्तृप्त करते हुए प्राचीन इतिहास में शोध कार्य करने हेतु प्रेरणा प्रदान की।

मै डॉ कृष्णानन्द चौधरी (पूर्व विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास विभाग टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर) का ह्रदय से आभारी हूँ जिन्होंने अपने सुझावों से सदा सहयोग प्रदान किया।

मैं डॉ0 ओम प्रकाश सिंह (विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास विभाग टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर) का आभारी हूँ जिनका सहयोग एवम् सानिध्य सतत् सम्बल प्रदान करता रहा।

मै श्री राजकुमार गुप्ता (वरिष्ठ प्रवक्ता प्राचीन इतिहास विभाग टी0 डी0 पी0 जी कालेज जौनपुर) का चिरन्तन आभारी रहूँगा जिनके सानिध्य एवं प्रेरणा ने शोध सम्बन्धी अनैपचारिकता पूरी कराने में अहम् भूमिका निभायी।

मै0 डॉ0 प्रवेश कुमार श्रीवास्तव (वरिष्ठ प्रवक्ता प्राचीन इतिहास विभाग टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर) का सदैव आभारी रहूँगा जो मुझे सदैव प्रोत्साहित करते रहे।

मै डा0 सुरेन्द्र नारायण उपाध्याय (रीडर प्राचीन इतिहास विभाग टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर) का सदैव आभारी हूँ जिन्होंने मुझे उचित सहयोग एवं सुझाव प्रदान किया।

मै श्री आनन्द शंकर चौधरी (प्रवक्ता प्राचीन इतिहास विभाग टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर) का भी आभारी हूँ जिन्होंने सर्वप्रकारेण समर्थन प्रदान किया।

मै पूज्य गुरू डॉ0 विरेन्द्र बहादुर सिंह (पूर्व प्राचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास विभाग टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर) का सदैव आभारी रहूँगा जिनकी परमकृपा से मुझमें ज्ञान पिपासा जागृत हुई।

कठोरता से सुदूर कोमलकान्त पदावली के प्रयोक्ता छात्रों एवं सम्पूर्ण विद्यालय परिवार में तादात्म्य स्थापित रखने वाले प्राचार्य डॉ0 राधेश्याम सिंह का कालत्रयी आभारी तथा ऋणी हूँ जिनके असीम स्नेह एवं आर्शीवाद से यह दूरूह कार्य सरलतापूर्वक तथा सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सका।

मै अपने पूज्य गुरू तथा समाजशास्त्री विचारक जिज्ञासुओं के लिए सर्वथा सुलभ ज्ञान संवेदना की दृष्टि से मानवता के उत्कृष्ठ उघ्येता, उच्च शिक्षा जगत के लब्ध एवं उपास्य डॉ0 अनिल प्रताप सिंह जी (रीडर समाजशास्त्र विभाग, टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर) का हृदय से आभारी हूँ जिनके सानिध्य में मुझे ज्ञानामृत पान करने का उत्कृष्ट अवसर सुलभ हुआ।

मै श्री राजीव प्रकाश सिंह (रीडर भूगोल विभाग टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर तथा महामंत्री शिक्षक संध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर) का भी आभारी हूँ जिन्होंने अपने उपयोगी तथा रचनात्मक सुझाओं से इस कार्य को पूर्ण करने में अपना सहयोग प्रदान किया।

मै श्री ज्योतिष यादव (प्राचार्य गुलालपुर) का भी आभारी हूँ जिनका प्यार भरा सहयोग मेरे अध्ययन काल से लेकर शोध कार्य तक चलता रहा।

मै श्रीमती सुमन सिंह (पत्नी डॉ0 अजय कुमार सिंह) का भी चीर ऋणी हूँ जिन्होंने मुझे शोधकर्ता नही अपितु घर का सदस्य समझकर समय–समय पर उत्साहवर्धन किया।

मै अपने अनुज श्री अभय प्रताप सिंह प्रवक्ता, महाविद्यालय भटनली बाजार (उनवल) गोरखपुर का भी अभारी हूँ, जिन्होनें समय–समय पर उचित सहयोग एवं सुझाव प्रदान

किया।

मै तिलकधारी महाविद्यालय जौनपुर के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह एवं डॉ0 राम सिंह के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय–समय पर पुस्तकीय सहायता प्रदान की साथ ही केन्द्रीय पुस्तकालय बी0 एच0 यू0 के रमेश पटेल के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने प्रत्येक क्षण मेरी मदद करने का व्रत ले रखा था साथ ही जैन शोध संस्थान वाराणसी के डॉ0 अशोक प्रताप सिंह के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनका सहयोग शोध कार्य में अति महत्वपूर्ण रहा।

मै ममतामयी स्वर्गीया पूज्य दादी श्रीमती सतना सिंह एव धैर्यशील पूज्य दादाजी स्व0 श्री भवानी प्रसाद सिंह का भी अत्यंत आभारी तथा चिरन्तर ऋणी रहूँगा जिनके आर्शीवाद से शोध कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्वादपि गरीयसी' की प्रतिमूर्ति स्वरूपा ममतामयी पूज्य माताजी (श्रीमती गीता सिंह) का आभारी हूँ जिनकी स्नेहित त्रिपथगा में अद्यावधि स्नापित होने का शुभ क्षण मिल रहा है। 'उत्तिष्ठ्त जागृत प्राप्य बरान्निबोधत् की दृष्टि से प्रेरणाप्रदायी पूज्य पिताजी श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह जी का ऋणी एवं आभारी हूँ जिन्होंने मुझमें शैक्षणिक उन्नयन की दृष्टि से गतिशीलता देखकर ही हर्षित होने का व्रत लिया है।

अपने भाईयों में मुकेश कुमार सिंह (वी0 डी0 ओ0), सूर्यभान सिंह प्रवक्ता राजनीति शास्त्र विभाग (के0 एन0 आई0 सुल्तानपुर) तथा श्री अजय कुमार सिंह, श्री सुरेन्द्र कुमार सिंह, श्री चन्द्रभान सिंह, श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह, श्री जितेन्द्र बहादुर सिंह तथा भाभी श्रीमती गायत्री सिंह, श्रीमती ज्ञान्ती सिंह, श्रीमती शशिकला सिंह, श्रीमती गुन्जन सिंह, का भी आभारी हूँ जिनकें आदेश–निर्देश मेरे लिए मंगलमय रहा।

साथ ही बड़े पिता श्री हौसिला प्रसाद सिंह, श्री राम विनय सिंह तथा बड़ी माँ श्रीमती अनारा सिंह तथा श्रीमती विद्या सिंह का भी ऋणी हूँ जिनका आर्शीवाद मेरे लिए सतत् सम्बल का कार्य करता रहा।

अपने सम्बन्धियों में श्री मारकण्डेय सिंह (सी0 डी0 ओ0 उन्नाव) तथा बुआ श्रीमती

सुषमा सिंह तथा इं0 नरेन्द्र बहादुर सिंह तथा अपने अन्य सभी संबन्धियों का आभारी हूँ, जिनके सुझाव मुझे उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करते रहें है।

मित्रों में श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह, संजीव अस्थाना (एडवोकेट), राजेश पाण्डेय, प्रदीप सिंह तथा प्रशान्त सिंह सहित अन्य मित्रों का भी आभारी हूँ जिनका सहयोग मुझे शोध–कार्य में मिला।

उन सभी मनीषियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके लेखों एवं पुस्तकों का अध्ययन इस शोध–प्रबन्ध के अन्तर्गत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किया गया है।

मैं तिलकधारी महाविद्यालय के समस्त शिक्षण व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का आभारी हूँ जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग इस शोध–कार्य के लिए मिला।

अन्त में शुद्ध एवं स्वच्छ टंकण हेतु श्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता, श्री राम कृष्ण गुप्ता एवं अजय श्रीवास्तव (NICS Computer) तथा प्रताप फोटो स्टेट सेन्टर से दिलीप का भी आभार व्यक्त करता हूँ।

विकास कुमार सिंह

संक्षिप्त नामों की सूची

ए0 एन0 जी0	–	आर्टिटेक्यूरल एन्हीक्यूटीज आफ नारर्दन गुजरात।
ए0 बी0	–	आर्कियोजोजी आफ बड़ौदा।
ए0 के0 के0	–	ऐन्टीक्यूटीज ऑफ कच्छ एण्ड काठियावाड़।
ए0 एस0 आई0	–	एनवल रिपोर्ट आफ दी आर्कियालोजिकल। सर्वे आफ इण्डिया।
भाव0 इस0	–	भावनगर इन्सक्रिपशन्स।
दे0 नाम0	–	देशीनाममाला आफ हेमचन्द्र।
ई0 आई0	–	इपिग्राफिया आफ इण्डिया।
ई0 एण्ड0 डी0	–	हिस्ट्री आफ इण्डिया एन टोल्ड वार्ड इट्स ओन हिस्टोरियन्स।
जी0 ओ0 एस0	–	गायकवाड़ ओरियन्टल सीरीज।
आई0 ए0	–	इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टर्ली।
जे0 बी0 बी0 आर0 ए0 एस0	–	जनरल आफ दी बाम्बे ब्रान्च आफ दी रायल एशियाटिक सोसायटी।
एन0 आई0 ए0	–	न्यू इण्डियन एन्टीक्यूरी।
प्र0 चि0	–	प्रबन्ध चिन्तामणि।
पी0 ओ0	–	पूना ओरियन्टलिस्ट।

विषय सूची

अध्याय प्रथम
वंश की उत्पत्ति एवं प्राचीनता 1-17

अध्याय द्वितीय 18-50
सामाजिक व्यवस्था

अध्याय तृतीय 51-73
आर्थिक जीवन

अध्याय चतुर्थ 74-118
धार्मिक जीवन

अध्याय पंचम 119-155
साहित्य और कला

अध्याय षष्ट 156-199
शासन व्यवस्था

संदर्भ ग्रन्थ सूची 200-204